5

बहुव्रीहि समास
व्यधिकरण बहुव्रीहि और समासान्त प्रत्यय

इस पाठ में बहुव्रीहि समास का आलोचन हो रहा है। प्राय अन्य पदार्थप्रधान अर्थात् पूर्वपद और उत्तरपद को छोड़कर कोई अन्य अर्थ ही प्रधान हो बहुव्रीहिसमास कहलाता है, उसका यह सामान्य लक्षण है। अन्य पद का अर्थ ही अन्यपदार्थ है। अन्य पदार्थ प्रधान हो जिसमें वह अन्य पदार्थ प्रधान है। अर्थात् जिस समास में सामासिक पद के अलावा अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है वह बहुव्रीहि समास होता है। जैसे:– पीताम्बरः। पीतम् अम्बरं यस्य स (पीला है वस्त्र जिसका) वह पीताम्बर। यहाँ बहुव्रीहि में समस्यमान पद में पीतम् और अम्बरम्। इन दो समस्यमान पदों से अतिरिक्त अन्यत्पद है जिसका अर्थ है विष्णु। निष्पन्न पीताम्बर पद से विष्णु के बोधन से अन्य पदार्थ प्रधानात्व से यह बहुव्रीहि समास होता है। और यह बहुव्रीहिः ''शेषो बहुव्रीहिः'' यह अधिकार सूत्र बल से प्रवृत्त होता है। इस पाठ में पाँच बहुव्रीहिसमास विधायक **विराजमान** है। वार्तिकों के भी संग्रहण है जो बहुव्रीहि समास, पूर्वपद का और उत्तरपद के लोप होता है। इसके बाद समास विधायक सूत्र के वर्णन अवसर पर उसके उदाहरणों में समासान्त कार्य विधान के लिए जो सूत्र अपेक्षित उनका भी यहां संग्रहित किया गया है।

समास विधायक सूत्र के अर्थ लेखन अवसर पर बहुत जगह पर समास होता है। यही पद का प्रयोग होता है। समस्यते इस पद का अर्थ होता है समास संज्ञा होती है। जैसे–''अनेकमन्यपदार्थे'' सूत्र का अनेक प्रथमान्त अन्य पदार्थ में वर्तमान विकल्प से समास होता है। और वह बहुव्रीहिसंज्ञक होता है। इसका तात्पर्य होता है ''अनेक प्रथमान्त्र अन्य पदार्थ में वर्तमान विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होती है। इसका तात्पर्य होता है ''अनेक प्रथमान्त अन्यपद के अर्थ में वर्तमान विकल्प से बहुव्रीहिसमास संज्ञा होती है। यही दूसरी जगह अवधेय है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे-

- बहुव्रीहि समास विधायक सूत्र जान पाने में;
- बहुव्रीहि में पूर्वपद का उत्तरपदलोप विधायक वार्तिकों को जान पाने में;
- विधायक सूत्र उपयोगिता से पुंवत्कार्य-तिलोप-सादेश विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- समासान्त प्रत्यय विधायक सूत्र जान पाने में।

(5.1) ''शेषो बहुव्रीहिः''

सूत्रार्थ–''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से पूर्व तक बहुव्रीहि का अधिकार है।

सूत्र व्याख्या–यह अधिकार सूत्र है। इस सूत्र से बहुव्रीहि समास का अधिकार होता है। इस सूत्र में ये दो पद है। शेषः बहुव्रीहिः ''प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समासः'' यह अधिकृत सूत्र है। यह अधिकार ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से पहले तक है। अर्थात् ''शेषो बहुव्रीहिः'' इस सूत्र से ''चार्थेद्वन्दः'' इससे पहले तक सूत्रों द्वारा जो समास होता है वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है। इसके अधिकार में पाँच सूत्र आते हैं–''अनेकमन्यपदार्थे'', ''संख्ययाव्यया सन्नदूराधिकसंख्यासंख्येये'', ''दिङ् नामान्यन्तराले'', ''तत्र तेनेदमिति सरुपे'' और ''तेन सहेति तुल्ययोगे''।

सूत्र में शेष नाम अन्य उक्ति से। ''द्वितीया श्रितातीतपतित गतस्थस्तप्राप्तापन्नैः'' इससे द्वितीयान्त का ''तृतीयातत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' इससे तृतीयान्त का ''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुखरक्षितैः'' इससे चतुर्थ्यन्त का ''पञ्चमी मथेन'' इससे पञ्चम्यन्त का, ''षष्ठी'' इससे षष्ठयन्त का और सप्तमी शौण्डैः'' सूत्र से सप्तम्यन्त का समास निहित होता है। अतः द्वितीयादि सप्तमी विभक्तियों को कहा गया है। इससे अन्यः शेषः प्रथमान्त है और प्रथमान्त समास का ही बहुव्रीहिसंज्ञक फलित होता है।

(5.2) ''अनेकमन्यपदार्थे'' (2.224)

सूत्रार्थ–अन्य पद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पद को विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इस सूत्र में अनेकम् प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''अन्यपदार्थे'' सप्तम्येकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''विभाषा'', ''शेषो बहुव्रीहिः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। न एकम् अनेकम् इति नञ्तत्पुरुषसमासः (नहीं है एक अनेक यह नञ्तत्पुरुष)। और अन्य और उसका पद–यहाँ कर्मधारय समास है

(अन्यत् च तत्पदम् अन्यपदम् इसमें कर्मधारय समास है) अन्यपदस्य अर्थः अन्यपदार्थ तस्मिन् अन्यपदार्थे इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। अन्य पद का अर्थ है अन्य पदार्थः उसमें अन्य पदार्थ में षष्ठी तत्पुरुष समास। वर्तमान शेष ग्रहण सामर्थ्य से प्रथमान्त पद प्राप्त होता है। प्रथमान्त का विशेषण है अनेकम्। अन्यपद का अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पद विकल्प से समास प्राप्त होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है। यह सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण–सूत्र में प्रथमान्त पदों के समस्यमान होने से द्वितीयान्त आदि के ही अन्यपदार्थत्व सम्भव होता है। द्वितीयान्त अन्य पदार्थ में उदाहरण-प्राप्तम् उदकं यं सः प्राप्तोदको ग्रामः। तृतीयान्त अन्य पदार्थ में उदाहरण है–ऊढ़ो रथो येन स ऊढरथः अनड़्वान्। चतुर्थ्यन्त में अन्य पदार्थ में उदाहरण होता है उपहृतः पशु यस्मै स उपहृतपशुः। पञ्चम्यन्त अन्य पदार्थ में उदाहरण है–उद्धृतः ओदनः यस्था सा उद्धतौरना। षष्ठयन्त अन्य पदार्थ में उदाहरण है–पीतमम्बरं यस्थ सः पीताम्बरः। सप्तम्यन्त अन्य पदार्थ में उदाहरण है–वीराः पुरुषा यस्मिन् स वीर पुरुषक ग्रामः।

तथाहि पीतम् अम्बरं यस्थ सः इस लौकिक विग्रह में पीत सु अम्बर सु इस अलौकिक विग्रह में अन्य पद के अर्थ में विष्णु अर्थ में विद्यमान पीत सु और अम्बर सु इस प्रथमान्त प्रस्तुत सूत्र से बहुव्रीहि संज्ञक होता है। इसके बाद पीत सु अम्बर सु इस समुदाय के ''कृत्तद्धित्तसमासाश्च'' इस सूत्र से प्रातिपदिक, संज्ञा होने पर ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् के दो सुप् का लोप होने पर पीत अम्बर होता है। तब ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस समास विधायक सूत्र में प्रथमान्त के प्रथमा निर्दिष्टत्व से पीत सु अम्बर सु इन दोनों का ही उसके बोध्यत्व से उपसर्जनत्व होता है। परन्तु उपसर्जनं पूर्वम् इससे किसका पूर्व निपात हो? इस शंङ्का में पूर्वनिपात विधायक सूत्र प्रवत्त हुआ है।

(5.3) ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ''

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में और सप्तम्यन्त विशेषण को पूर्व में पूर्व प्रयुज्य होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधायक सूत्र हैं। इस सूत्र से पूर्वनिपात होता है। द्वि पदात्मक इस सूत्र में ''सप्तमी विशेषणे'' यह प्रथमा द्विवचनान्त पद है और बहुव्रीहौ यह सप्तम्येक वचनान्त पद है। सप्तमी च विशेषणं च सप्तमीविशेषणे यह इतरेतरद्वन्द समास है। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्माः'' नियम से सप्तमी का तदत्तविधि में सप्तम्यन्त पद प्राप्त होता है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्व क्रियाविशेषण द्वितीया एकवचनान्त की अनुवृत्ति होती है। प्रयुज्यते इस क्रियापद को अध्याहार्य करना चाहिए। बहुव्रीहि समास में सप्तम्यन्त पद को और विशेष्ण का पूर्व प्रयोग होता है।

उदाहरण–विशेषण का पूर्व निपात होने पर पीताम्बरः इसका उदाहरण है। पीतम् अम्बरं यस्य स (पीला है वस्त्र जिसका) इस लौकिक विग्रह में पीत सु अम्बर सु इस अलौकिक विग्रह में अन्य पद के अर्थ में विष्णु अर्थ में ''अनेकमन्य पदार्थे'' इससे बहुव्रीहि में सुप् का लोप होने पर पीत अम्बर होता है। तब इन दोनों समास विधायक सूत्रों में अनेकम् को प्रथमा निर्दिष्टत्व से बोध्यत्व से इन दोनों के उपसर्जनत्व से किसका पूर्व निपात हो? इस प्रश्न में प्रस्तुत

सूत्र से विशेषणभूत पीत शब्द का पूर्व निपात होता है। इसके बाद पीत अम्बर इस स्थिति में सवर्ण-दीर्घ होने पर निष्पन्न पीताम्बर से सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में पीताम्बर: रूप बना।

सप्तम्यन्त का पूर्व निपात होने पर उदाहरण है कण्ठेकाल:। कण्ठे काल: यस्य स: (कण्ठ में काल है जिसके वह) इस लौकिक विग्रह में कण्ठ ङि काल सु इस अलौकिक विग्रह में सप्तमी ग्रहण सामर्थ्य से व्यधिकरण बहुव्रीहि समास होता है। इसके प्रकृत सूत्र से सप्तम्यन्त का पूर्व निपात होने पर प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातु प्रातिपतिकयो:'' इससे सुप् का और सु का लोप प्राप्त होने पर ङे लोप के निषेध के लिए यह सूत्र प्रवृत्त हुआ है–

(5.4) ''हलन्तात् सप्तम्या: संज्ञायाम्'' (6.3.7)

सूत्रार्थ–हलन्त और अदन्त से सप्तमी का उत्तरपद परे संज्ञा में गम्यमान होने पर लोप नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से लोप का निषेध होता है। त्रि पदात्मक इस सूत्र में **हलन्तात्** पञ्चम्येकवचनात्त पद है और **सप्तम्या:** यह षष्ठी एकवचनान्त पद है और **संज्ञायाम्** यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''अलुगुत्तरपदे'' यह अधिकृत सूत्र है। हन् च अत् च हलत्, हलत् अन्ते यस्थ स हलदन्त: तस्मात् हलन्तात् इसमें द्वन्दगर्भ बहुव्रीहि समास है। संज्ञायाम् इसके साथ अन्वय के लिए गम्यमान होने पर लिया गया है (इत्यध्याहार्यम्)। हलन्त और अदन्त से सप्तमी के उत्तरपद परे संज्ञा में गम्यमान लोप नहीं होता है यही सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण–हलन्त से पर सप्तमी के अतुक उदाहरण होता है–त्वचिसार:। अदत्त पर सप्तमी का अलोप होने पर कण्ठेकाल: उदाहरण है। कण्ठे काल: यस्य स: (कण्ठ में काल है जिसके) इस लौकिक विग्रह में कण्ठ डि काल सु इस अलौकिक विग्रह में बहुव्रीहि में सप्तम्यन्त का पूर्व निपात होने पर, सुप् के ङि और सु प्रत्यय का लोप होने पर अदत्त कण्ठशब्द से सप्तमी के ङि के विधान से उसका लोप इस सूत्र से होता है। इसके बाद सु का लोप होने पर प्रक्रिया कार्य में **कण्ठेकाल:** रूप होता है।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''शेषो बहुव्रीहि:'' इस सूत्र में शेषशब्द से किसका ग्रहण किया गया है?
2. ''शेषो बहुव्रीहि:'' इस सूत्र का अधिकार कहाँ तक है?
3. ''बहुव्रीहि पदार्थे'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
5. ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
6. ''हलन्तात् सप्तम्या: संज्ञायाम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

7. अनेकम् इससे किसका ग्रहण किया गया है?

8. सप्तम्यन्त और विशेषण का पूर्वनिपांत में उदाहरण कौन सा है?

9. कण्ठेकालः यहाँ सप्तमी का लोप क्यों नहीं हुआ?

(5.4.1) ''प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्य–प्र आदि से परे जो धातुज कृदन्त शब्द तदन्त का प्रथमान्त का प्रथमान्त के साथ विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है और बहुव्रीहि में पूर्वपदस्थ धातुज उत्तरपद का विकल्प से लोप होता है।

वार्तिक व्याख्या–यहाँ वार्तिक में चकार से बहुव्रीहि समास विधान स्वीकार किया गया है। वस्तुतः तो ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे बहुव्रीहि समास सिद्ध होता है। यह वार्तिक पूर्वपदस्थ धातुज का उत्तरपद का वैकल्पिक लोप होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण हैं प्रपर्णः, प्रपतिपर्णो। प्रकृष्टानि पतितानि इस विग्रह में प्र का पतित जस् से ''प्रादयो शताद्यर्थे प्रथमया'' इस वार्तिक से नित्य तत्पुरुष समास होने पर प्रक्रिया कार्य में प्रपतितानि रूप निष्पन्न होता है। प्रतितानि पर्णानि यस्य सः इस लौकिक विग्रह में प्रपतित जस् पर्ण जस् इस अलौकिक विग्रह में अन्य पदार्थ में वृक्ष रूप अर्थ में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इससे विशेषण के प्रपतित जस् का पूर्ण निपात होने पर समास के प्रातिपदिकत्व से ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इसे सुप् के सुप् के दोनों जए प्रव्ययों का लोप होने पर प्रपतितपर्ण होता है। तब प्रोक्त वार्तिक से बहुव्रीहि में पूर्वपद के प्रपतित का धातु ज उत्तरपद का पतित का विकल्प से लोप होने पर सु प्रत्यय के प्रक्रिया कार्य में **प्रपर्णः** रूप होता है। लोप के वैकल्पिक से उसके अभाव पक्ष में प्रपतितपर्णः रूप बना। इस वार्तिक का उदाहरण है–प्रपतितानि पलाशानि यस्य प्रपलाशः पादपः।

(5.4.2) ''नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्य–नञ् के परे अस्त्यर्थक शब्दान्त का प्रथमान्त का प्रथमान्त के साथ विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है और बहुव्रीहि में पूर्वपदस्थ अस्त्यर्थक का उत्तरपद का विकल्प से लोप होता है।

वार्तिक व्याख्या–यहाँ वार्तिक में चकार से बहुव्रीहि समास विधान स्वीकार हुआ है। वस्तुतः तो ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे ही बहुव्रीहि समास सिद्ध होता है। इस वार्तिक को पूर्वपदस्थ अस्त्यर्थक उत्तर पद का वैकल्पिक लोप विधायक सूत्र है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है अपुत्रः अथवा अविद्यमानपुत्रः न विद्यमानः इस विग्रह में ''न'' का विद्यमान सु से ''नञ्'' सूत्र से तत्पुरुष समास में प्रक्रिया कार्य में अविद्यमानः रूप निष्पन्न होता है। अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः इस लौकिक विग्रह में अविद्यमान मु पुत्र सु इस

अलौकिक विग्रह में अन्य पद के अर्थ में जन रूप अर्थ में ''अनेकमन्य पदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इससे विशेषण का अविद्यमान सु का पूर्वनिपात होने पर समास के प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातुप्रातिपदिकयो:'' इससे सुप् के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर अविद्यमान पुत्र होने पर प्रोक्त वार्तिक से बहुव्रीहि में पूर्व पद का अविद्यमान का अस्त्यर्थक उत्तर पद का विद्यमान का विकल्प से लोप होने पर सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में अपुत्र: रूप होता है। लोप के वैकल्पिकत्व से उसके अभाव पक्ष में अविद्यमान पुत्र: रूप होता है।

(5.4.3) ''सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्थ–सप्तम्यन्त सहित और उपमान सहित पूर्वपद का पदान्त से पूर्वपद को समास होता है और उत्तरपद का लोप होता है।

वार्तिक व्याख्या–यहाँ वार्तिक से चकार से बहुव्रीहिसमास विधान स्वीकृत किया जाता है। वस्तुत: तो अनेकमन्यपदार्थे'' इससे ही बहुव्रीहिसमास सिद्ध होता है। यह वार्तिक पूर्वपदस्थ उत्तरपद लोप का विधायक है।

उदाहरण–इस वार्तिक का सप्तम्यन्तसहित पूर्वपद पक्ष में उदाहरण है तावत् कण्ठेकाल:। कण्ठे तिब्बति इस विग्रह में ''सुपिस्च:'' इससे कण्ठ उपपद में स्था धातु से क प्रत्यय होता है। कण्ठेस्थ: पद निष्पन्न होता है। कण्ठेस्थ: काल: यस्य (कण्ठ में बैठा है काल जिसके) इस लौकिक विग्रह में कण्ठेस्थ सु काल सु इस अलौकिक विग्रह में अन्य पद के अर्थ में शिव रूप अर्थ में ''अनेकअन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ'' इस विशेषण का कण्ठेस्थ सु का निपात होने पर समास का प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातुप्रातिपदिकयो:'' इस सुप् के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर कण्ठेस्थकाल बना। इसके बाद प्रोक्त वार्तिक से पूर्वपद का कण्ठेस्थ के उत्तरपद स्थ का लोप होने पर सु प्रत्यय का प्रक्रिया कार्य में कण्ठेकाल: रूप बना।

उपमानसहित पूर्वपद में समास का उदाहरण है उष्ट्रमुख:। उष्ट्रमुखमिव मुखं यस्य (ऊँट जैसा मुख है जिसका) इसके उत्तरपद का लोप होने पर प्रक्रियाकार्य में उष्ट्रमुख: रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-2

10. ''प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोप:'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

11. प्रपर्ण: यहाँ कौन सा विग्रह है?

12. ''नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोप:'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

13. अपुत्र: यहाँ कौन-सा विग्रह है?

14. ''सप्तम्युपमान पूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

15. ''सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च'' इस वार्तिक का सप्तम्यन्त सहित पूर्वपद पक्ष में उदाहरण क्या है?

16. ''सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च'' वार्तिक के उपमान सहित पूर्वपद पक्ष में उदाहरण क्या है?

(5.5) ''स्त्रियाः पुंवद् माषित पुस्करादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियायपूरणी प्रियादिषु'' (6.3.34)

सूत्रार्थ–तुल्य प्रवृत्तिनिमिन्त

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पुंवद् होता है। इस सूत्र में स्त्रियाः पुंवत् भाषित पुस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियाम् अपूरणीप्रियादिषु'' यह पदच्छेद है। यहाँ स्त्रियाम् पञ्चमी एकवचनान्त पद है। पुंवत् यह अव्ययपद है। भाषितपुंस्कादनूङ् प्रथमा एकवचनात्त पद हैं। समानाधिकरणे और स्त्रियाम् इन दोनों सप्तम्येक वचनान्त पद हैं। अपूरणीप्रियादिषु यह सप्तमी बहुवचनान्त पद है। ''अलुगुत्तरपदे'' इस सूत्र से उत्तरपदे इसकी अनुवृत्ति होती है। भाषित पुस्कादनूङ स्त्रियाः पुंवत् अपूरणीप्रियादिषु समानाधिकरणे स्त्रियाम् उत्तरपदे यह अन्वयः है।

भाषित पुस्कादनूङ् यह लुप्त षष्ठी एकवचनात्त पद है। उसको **स्त्रियाः** इसका विशेषण है। ऊङः अभावः अनूङ् (ऊङ् का अभाव) यह अव्ययीभाव समास है। भाषितः पुमान् मेन तद् भाषित पुंस्कम् यहाँ बहुव्रीहि समास है। तदस्य अस्ति इति विग्रह में अर्श आद्यचा त्राषितपुंस्कशब्दः निष्पन्न होता है। जो शब्द प्रवृत्ति निमित्त को आश्रित मानकर पुल्लिङ्ग में प्रवृत्त होता है उसी से ही प्रवृत्त मिमित्त को आश्रित मानकर यदि अन्य जिस मिङ्ग में प्रवृत्त होता है तब वह भाषितपुंस्क होता है। भाषितपुंस्काद् अनूङ् यस्यां सा भाषितपुंस्कादनूङ् तस्थाः (भाषितपुंस्तक से अनूङ् होता है जिसमें) बहुव्रीहि समास है। यहाँ नियातम से समास में पञ्चमी से अलुक और षष्ठी से लुक प्राप्त होता है। स्त्रियाः का स्त्रीवाचक शब्द का ही अर्थ होता है। भाषितपुंस्कादनूङ् स्त्रियाः इसका अर्थ है–जिससे परे ऊङ प्रत्यय विहित नहीं होता है। उसके समान पुंवद्भापित का और स्त्रीवाचक शब्द का पुंवद् भाव नहीं होता है।

प्रिया आदिर्येवन ते प्रियादयः (प्रिया आदि में है जिसके) तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि महै। पूरणी च प्रियादयश्च पूरणीप्रियादयः तेषु पूरणीप्रियादिषु यहाँ इतरेतरद्वन्द है। न पूरणीप्रियादिषु अपूरणीप्रियादिषु यहाँ नञ्तत्पुरुष समास है। पूरणी शब्द से यहाँ पूरणार्थ प्रत्ययों का स्त्रीलिङ्गशब्दों का द्वितीया आदि का ग्रहण किया गया है। प्रियादयः प्रियादिगण में पठित शब्दों को कहा गया है। उत्तरपदे इस अन्वय में अपूरणीप्रियादिषु इसका अर्थ होता है। पूरण अर्थ प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्गशब्दों में प्रियादिषु और उत्तरपद में आगे से नहीं होता है।

स्त्रियाम् उत्तरपद में विशेषण से स्त्रीलिङ्गवाचक उत्तरपद पर में होता है। एवं सूत्रार्थ आता है. .. तुल्य में प्रवृत्तिनिमित्त में उक्त पुंस्क जिससे ऊङ अभाव में जहाँ तथाभूत स्त्रीवाचक शब्द का पुंवाचक का ही रूप समानाधिकरण स्त्रीलिङ्ग में उत्तरपद में नहीं होती है किन्तु पूरणी

टिप्पणियाँ

और प्रियादि के परे नहीं होता है।

सूत्र में अनूङ् पद का क्या प्रयोजन होता है वाजोकमार्यः। वामोरु शब्द स्त्रीत्व विवक्षा में ''सहितशफलक्षणवामादेश्च'' इस सूत्र से ऊङ प्रत्यय होने पर वामोरुः निष्पन्न होता है। वामोरुः भार्या यस्य सः इस लौकिक विग्रह में वामोरु सु आर्या सु इस अलौकिक विग्रह में बहुव्रीहि समास में प्रक्रिया कार्य होने पर वागोरु भार्या रूप होता है। इस सूत्र में अनूङ पद के अभाव में वामोक शब्द का भाषितपुंरकत्व से स्त्रीलिङ्ग उत्तरपद में भार्याशब्द परे उसके पुंवद्भाव पर आपत्ति होनी चाहिए। उससे वामोकभार्यः यह अनिष्ट रूप होता है। इसके निराकरण के लिए ही अनूऊ पद होता है। अनूङ् पद के सत्व से वामोरु शब्द का अङ् प्रत्यया-तत्व से पुंवद्भाव नहीं होता है।

सूत्र में अपूरणीप्रियादिषु इस पद के सत्व से कल्थाली पञ्चमी थासां रात्रीणां ताः कल्याणी पञ्चमारात्रयः यहां पञ्चमी पूरणार्थ प्रत्ययान्त में स्त्रीलिङ्ग उत्तरपद में कल्याणी प्रिया यस्य स कल्याणी प्रियः यहाँ स्त्रीलिङ्ग में प्रियाशब्द उत्तरपद परे पुंवद्भाव नहीं होती है।

उदाहरण–सूत्र का उदाहरण है–चित्र गुः। चित्रा गावः यस्य सः इस लौकिक विग्रह में चित्रा जस् भो जस् इस अलौकिक विग्रह में बहुव्रीहि में पूर्वनिपात होने पर, प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुप् का लोप होने पर चित्रा गो होता है। नित्रा शब्द का पुल्लिङ्ग में भी समान अर्थ प्रयोग से भी भाषितपुंस्कत्व होता है। चित्रा शब्द से पर समानाधिकरण स्त्रीलिङ्गक गो शब्द है तथा चित्रा शब्द से ऊंङ भी नहीं है। अतः प्रोक्त सूत्र से चित्रा शो स्थित समानाधिकरण स्त्रिलिङ्ग गोशब्द से परे भाषितपुंस्क का चित्राशब्द का पुंवद्भाव में चित्र गो होता है। इसके वाक उपसर्जन संज्ञक गोशब्द का अन्त्य ओकार का ''गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य'' दूसरे ह्रस्व उकार होने पर प्रक्रियाकार्य में निष्पन्न होने पर चित्रगुशब्द से विशेष्य के अनुसार पुल्लिंग होने पर सु प्रत्यय होने पर चित्रगुः रूप निष्पन्न होता है। इसी प्रकार रूपवती भार्या यस्य स रूपवत् भार्यः (रूपवती स्त्री है जिसके) इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है।

(4.6) ''अप्पूरणी प्रमाण्योः''

सूत्रार्थ–पूरणार्थप्रत्ययान्त जो स्त्रीलिङ्ग तदन्त से और प्रमाण्यन्त से बहुव्रीहि के समासान्त का तद्धितसंज्ञक अप् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अप् प्रत्यय होता है। इस सूत्र में अप् प्रथमा एकवचनान्त पद है। पूरणीप्रमाव्योः यह सप्तमी द्विवचनान्त पद है। ''बहुव्रीहौसक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच्'' इस सूत्र से बहुव्रीहौ पद की अनुवृत्ति हो रही है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये चार अधिकृत (अधिकार) हैं। पूरणी च प्रमांणी च पूरणीप्रमाण्यौ नयोः पूरणीप्रमाण्योः यहाँ इतरेतरद्वन्द समास है। ''परश्च'' इस अधिकार बल से पूरणीप्रमाण्योः का और बहुव्रीहौ का पञ्चम्यन्तता से विपरिणाम होता है। इससे पूरणीप्रमाणीभ्याम् और बहुव्रीहेः पद प्राप्त होता है। पूरणी प्रमाणीभ्याम् यहाँ तदन्तविधि में बहुव्रीहि का अन्वय से पुख्यान्त प्रमाणिकता से बहुव्रीहेः होता है। पूरण्यन्तत्व से ''तस्य पूरणेडट्'' इत्यादि सूत्रों से

विहित जो हैं वे प्रत्यय तदन्त के ग्रहण किये जा रहे है। प्रमाणी शब्द प्रमीयते अनेन इस विग्रह में प्र पूर्वक या धातु के ल्युट् प्रत्यय होने पर निष्पन्न प्रमाणशब्द का स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् निष्पन्न होता है। एवं सूत्रार्थ होता है।–''पूरण्यन्त से और प्रमाण्यन्त से बहुव्रीहि के समासान्त तद्धितसंज्ञक अप् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र के पूरण्यन्त में बहुव्रीहि में उदाहरण होता है कल्याणी पञ्चमाः पूरणी इस अर्थ में षष्ठयन्त से पञ्चन् शब्द से मट् प्रत्यय होने पर स्त्रित्व विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होने पर पञ्चमी शब्द निष्पन्न होता है। और सूत्रार्थ आता है–पूरण्यन्त से और प्रमाण्यन्त से बहुव्रीहि के समासान्त तद्धित संज्ञक अप् प्रत्यय होता है।

कल्याणी पञ्चमी मासां राजीणां ताः इति लौकिक विग्रह में कल्याणी सु पञ्चमी सु इस अलौकिक विग्रह में बहुव्रीहि के विशेषण का पूर्व निपात होने पर सुप् का लोप होने पर कल्याणी पञ्चमी होता है। तब कल्याणीपञ्चमी बहुव्रीहि के पूख्यन्त से प्रकृत सूत्र से अप् प्रत्यय होता है। अप् के वकार का ''हलन्त्यम्'' इससे द्वत्संज्ञा होने पर ''तस्थ लोपः'' इससे लोप होने पर कल्याणी पञ्चमी अ होता है। तब कल्याणी पञ्चमी की ञ संज्ञा होने पर ''यस्येति च'' इससे इकार का लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न कल्याणीपञ्चम् शब्द से स्त्रीत्व विवक्षा में टाप् प्रत्यय होने पर जस् प्रत्यय की प्रक्रिया कार्य में कल्याणी पञ्चमाः रूप सिद्ध होता है।

प्रयाणीशब्दान्त में बहुव्रीहि में उदाहरण है–स्त्री प्रमाणं यस्य सः स्त्रीप्रमाणः पुरुषः (स्त्री प्रमाण है जिसका वह स्त्रीप्रमाण पुरुष)

पाठगत प्रश्न-3

17. ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' इस सूत्र से क्या होता है?
18. ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणी प्रियादिषु'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
19. ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' इस सूत्र में अनूङ् पद का क्या प्रयोजन है?
20. ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' इस सूत्र में अपूरणीप्रियादिषु इस पद का क्या प्रयोजन है?
21. ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
22. ''अप्पूरणीप्रमाण्योः'' इस सूत्र से क्या होता है?
23. ''अप्पूरीप्रमाण्योः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

24. ''अप्पूरणीप्रमाण्योः'' इस सूत्र के पूरयन्त में और प्रमाण्यन्त में बहुव्रीहि में उदाहरण में कौन सा उदाहरण है।

(5.6) ''संख्ययाद्व्ययासवादूराधिकसंख्याः संख्येये'' (22.25)

सूत्रार्थ–संख्यावाचक एकादिसंख्या से अव्यय आदि को विकल्प से समास होता है और बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इस सूत्र में संख्यया, अव्ययासन्नदूराधिकसंख्याः संख्यये पदच्छेद है। संख्यया यह तृतीया एक वचनात्त पद है। 'अन्ययासन्न इराधिक संख्या यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है। संख्येये यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''परिभाषा'', ''शेषोबहुव्रीहि' ये अधिकृत सूत्र हैं। अव्ययं च आसन्नं च अदूरञ्च अधिकं च संख्या च अव्ययासन्नादूराधिकसंख्या यहाँ इतरेतरद्वन्दसमास है। अव्ययासन्नादूराधिकसंख्या का अर्थ सुबन्त से है। यहाँ संख्या शब्द स्वरूप पर नहीं है वह निश्चित रूप से एकादिशब्दपरक है। विंश (बीस) हैं पहले एक आदिशब्द संख्याओं में हैं वे विशेष्य लिङ्ग होते हैं। विंश (बीस) आदि से नवति (नब्बे) तक शब्द तो नित्य एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग में विद्यमान संख्या में संख्या से से च अर्थ में होते हैं। यहाँ अमरवचन प्रमाण है।

'बीस से पहले सदा एकत्व होने संस्था में

और संख्यावाचक जो शब्द होते हैं वे ही संख्येय अर्थ संख्या होती है। यहाँ सूत्रार्थ होता है–

संख्येय वाचक एकदिसंख्या शब्द से अव्ययादि का विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

उदाहरण–सूत्र में अव्यय के साथ बहुव्रीहि में उदाहरण है–उपदशाः यहाँ उप इस समीप अर्थ में वर्तमान अव्यय है। दशानां समीपे ये लौकिक विग्रह में दशन् आम् उप इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से संख्येय वाचक संख्या शब्द से दशन् आम् इससे उप यह अव्यय को बहुव्रीहि समास होती है। इसके बाद अव्यय का पूर्व निपात होने पर प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुप् का लोप होने पर उपदशन् रूप निष्पन्न होता है। इसके बाद समासान्त डच् प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में उपदशाः रूप होता है।

आसन्नशब्द के साथ समास में उदाहरण है विंशतेः आसन्नाः आसन्नविंशाः (बीस के आसन है जो) अदूर शब्द के साथ समास में उदाहरण–त्रिंशतः अदूराः अदूरत्रिंशाः। (तीस के समीप है जो) अधिक शब्द के साथ समास में उदाहरण है चत्वाारिंशतः अधिकाः अधिकचत्वारिंशाः। इस संख्या से समास में उदाहरण है–द्वौ च त्रयश्च द्वित्राः।

यहाँ उपदशन् इस स्थिति में समासान्त डच् प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है–

(5;8) ''बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात्''

सूत्रार्थ–संख्येय में जो बहुव्रीहि समास है उससे समासान्त तद्धित संज्ञक ङ्च प्रत्यय होता है। किन्तु बहुगण शब्द के अन्त से बहुव्रीहि का नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त को ङच् प्रत्यय होता है। इस सूत्र में बहुव्रीहौ संख्येये डच् अबहुगणात् यह पदच्छेद है। बहुव्रीहि और संख्या में सप्तम्येकवचनान्त पद है। डच् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है और अबहुगणात् पञ्चम्येक वचनान्त पद है। ''प्रत्यय:'', ''परश्च'', ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ये अधिकृत सूत्र है। ''परश्च'' इस अधिकार बल से बहुव्रीहि में पञ्चम्यन्तता से विपरिणाम होता है। और उसके संख्येये इससे अन्वय से संख्येये जो बहुव्रीहि तस्मात् यही अर्थ है। न बहुगण: अबहुगण: इस अबहुगण से नञ् समास होता है। बहुगण शब्दान्त से बहुव्रीहि का नहीं होता है यही तात्पर्य है। किन्तु सूत्र का अर्थ आता है–संख्येय से जो बहुव्रीहि समास है उससे समासान्त तद्धितसंज्ञक डच् प्रत्यय होता है। किन्तु बहुगणशब्दान्त से बहुव्रीहि नहीं होता है।

सूत्र में अबहुगणात् इस पद के सत्व से बहूना समीप जो होता (सत्वाद् बहूनां समीपे में सन्ति), गण के समीप हैं इस विग्रह में निष्पन्न होते है जैसे:–उपबहुशब्द से और उपगणशब्द से डच् प्रत्यय नहीं होता है।

उदाहरण–दशानां समीपे ये इस लौकिक विग्रह में (दशाओं के समीप) दशन् आम् उप इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से संख्येयवाचक संख्या शब्द से दशन् आम् इससे उप अव्यय को बहुव्रीहि समास संज्ञा होती है। इसके बाद अव्यय का पूर्वनिपात होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर सुप् का लोप होने पर उपदशन् इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से समासान्त में डच् प्रत्यय होने पर, डचों में यथाक्रम ''चुटू'' इससे ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोप:'' इससे इन दोनों का लोप होने पर उपदशन् अ इस स्थिति में पूर्वसंज्ञा होने पर पूर्व की भसंज्ञा होने पर ''नस्तद्धिते'' इससे टि का अन् लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर उपदशशब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद जस् प्रत्यय होने पर उपदशा: रूप सिद्ध होता है।

आसन्न शब्द के साथ समास में उदाहरण है आसन्नविंशा: यहाँ विंशते: आसन्ना: इस विग्रह में समास में आसन्न विंशति इस स्थिति में पूर्व सूत्र से डच् होने पर आसन्न विंशति अ होने पर ति शब्द के लोप के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है–

(5.10) ''ति विंशतेर्डिति'' (6.4.14.2)

सूत्रार्थ–डित् (ड् की इत्संज्ञा होने पर) विंशन्ति के भ संज्ञक ति शब्द का लोप होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से ति का लोप होता है। इस सूत्र में ति विंशते: डिति पदच्छेद है। ति लुप्त षष्ठी एकवचान्त पद है। विंशते: यह षष्ठी एकवचनान्त पद है। डिति सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''भस्य'' यह अधिकार सूज है। ''अल्लोपडन:'' इस सूत्र से लोप: की अनुवृत्ति होती है। विंशते: इससे विंशत्ति का ग्रहण किया गया है। डिति विंशते: भस्य ति

लोपः यह अन्वय है। और सूत्र का अर्थ होता है–डिति (ड की इत्संज्ञा) परे विंशति् के ञ संज्ञक ति शब्द का लोप होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है असान्नविंशाः। यहाँ विंशति का आसन्न विग्रह में ''संख्यायाऽब्ययासचाद्राविक संख्या संख्येये'' सूत्र से समास में आसन्न विंशति इस पूर्वसूत्र से डच् प्रत्यय होने पर आसन्न विंशति अ इस स्थिति में प्रकृत सूत्र से डित् और डच् परे भसंज्ञक आसन्नविंशतिशब्द के ति का लोप होता है। इसके बाद लोप होने पर आसन्न विंश अ होने पर ''यस्येतिच'' इसके अकार का लोप होने पर सर्वसंयोग कहोने पर निष्पन्न आयत्रविंश शब्द से जस् प्रव्यय होने पर प्रखिया कार्य में आसन्नविंशाः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-4

25. ''संख्ययाव्यायासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

26.''बहुव्रीहौ संख्येयेडजबहुगणात्'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

27. ''बहुव्रीहौ संख्येयेडजबहुगणात्'' इस सूत्र में अबहुगणात् पद का क्या प्रयोजन है?

28. ''ति विंशतेर्डिति'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

29. ''संख्ययाव्ययासवादूराधिकसंख्याः संख्येये'' इसका विग्रह सहित उदाहरण दीजिये?

30. उपदशाः यहाँ पर डच् प्रत्यय क्यों और किस सूत्र से होता है?

39. आसन्नविंशाः यहाँ विंशति के ति का लोप किस सूत्र से होता है?

(4.90) ''दिङ्नामान्यन्तराले'' (2.2.26)

सूत्रार्थ–दिशाओं के नामचावी अन्तराल वाचक का वाक्य में विकल्प से समास होता है, वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–षड्विधि पाणीनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इस सूत्र में दिङ्नामानि अन्तराले पदच्छेद है। दिङ्नामानि यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है। अन्तराले सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''विभाषा'', ''शेषो बहुव्रीहि'' ये अधिकृत सूत्र हैं। दिशः नामानि दिङ्नामानि यहाँ षष्ठीतत्पुरुष समास है। दिङ्नामानि पद दिशावाचक दिशार्थ में कड़ीवादी सुबन्त है। अन्तराले पद यहाँ वाच्य लाने के लिए लिया गया है। अतः सूत्र का अर्थ होता है-''दिशावाची सुबन्तों के अन्तराल वाच्य में समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है-तावत् दक्षिणपूर्वा। दक्षिणस्थाश्च पूर्वस्याश्च दिशः अन्तरालम् इस लौकिक विग्रह में दक्षिणा ङ्स पूर्वा ङस् इस अलौकिक विगब्रह में प्रकृतसूत्र से दिशावाचक दक्षिणा ङस् पूर्वा ङस् बहुव्रीहि समास संज्ञक होता है। इसके बाद प्रक्रियाकार्य में

दक्षिणापूर्वा होने पर ''सर्वनाम्नोवृत्तिमात्रेपुंवद्भाव:'' इस वार्तिक से दक्षिणशब्द का पुंवद भाव होने पर दक्षिणपूर्वा शब्द निष्पन्न होता है। निष्पन्न दक्षिणपूर्वा शब्द से दिग् विशेष्य के अनुसार स्त्रीत्व विवक्षा में सुप्रत्यय होने पर दक्षिणपूर्वा रूप निष्पन्न होता है।

(4.11) ''तत्र तेनेदमितिसकपे'' (2.2.27)

सूत्रार्थ–सप्तम्यन्त ग्रहण विषय में सरूप पद में और तृतीयान्त में प्रहरण विषय में इदं युद्धं प्रवृत्तम् ( ) इस अर्थ में कर्मव्यतिहार में द्योत्य होने पर विकल्प से समास होता है, और बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इस सूत्र में तत्र तेन इदम् इति सकपे पदच्छेद है। ''तत्र'' सप्तम्यन्त अव्यय पद है। तेन तृतीया एकवचनान्त पद है। इति यह अव्ययपद है। रू सकये सप्तम्येकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''विभाषा'', ''शेषोबहुव्रीहि:'' ये अधिकृत सूत्र हैं।

तेन इससे सप्तम्यन्त में पद में विवक्षा में। ग्रहण विषये यह प्रथमा द्विवचनान्त पद है। उसका विशेषण अध्याहार्यम्। प्रह्रियते अनेन इस विग्रह में करण में ल्युटा प्रहरणम् पद निष्पन्न होता है। प्रहरण नाम दण्डादि है। तद् विषय: वाच्यं यमो: ते प्रहरणविषये बहुव्रीहि समास है। ग्रहण वाचक यह अर्थ है।

तेन इस तृतीयान्त पद में विवक्षा में है। प्रहरण विषय में प्रथमा द्विवचनान्त का विशेषण लिया गया है। प्रह्रियते अनेन इस विग्रह में करण में ल्युटा प्रहरण शब्द निष्पन्न होता है। प्रहरणं नाम दण्डादिक का है। तद्: विषय: वाच्यं ययो: ते ग्रहण विषये यहाँ बहुव्रीहि समास है। इसका अर्थ प्रहरण वाचक है।

सरुपे यह प्रथमाद्विवचनात्त पद विशेषण है। ग्रहणविषये इस सप्तम्यन्त के साथ प्रहरण विषय में और तृतीयान्त के साथ अन्वय होता है। इदम् का अर्थ है निर्देश:। यहाँ युद्धं प्रवृत्तम् (युद्ध को प्रवृन्त) विशेष्य को लिया गया है। कर्मव्यतिहार द्योत्य होने पर यह अध्याहार्य (लिया गया) है। कर्मव्यतिहार नाम परस्परग्रहण और परस्परप्रहरण का है।

इति शब्द लौकिकप्रसिद्ध प्रकार वाचक है। अर्थात् केशाकेशी इत्यादि लौकिक प्रयोग में-यावान् अर्थ: प्रसिद्ध: तावत्यर्थे एव अयं बहुव्रीहि: भवति। (यावान् अर्थ प्रसिद्ध तावत् इस अर्थ में बहुव्रीहि समास होता है।

और यहाँ सूत्रार्थ होता है–सप्तम्यन्त ग्रहण विषय में सकपपद में और तृतीयान्त में प्रहरण विषय में ''इदं युद्धं प्रवृत्तम्'' (युद्ध को प्रवृत्त) इस अर्थ में कर्मव्यतिहार में द्योत्य होने पर विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का सप्तम्यन्त समास में उदाहरण है केशाकेशि। केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्ध प्रवृत्तम् (केशों को पकड़कर प्रवृत्त युद्ध) इस लौकिक विग्रह में केश सुप् केश सुप् इस अलौकिक विग्रह में प्रकृतसूत्र से सप्तम्यन्त का बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद समास का

प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपो धातुप्रातिपदिकयो:'' इससे सुप् का लोप होने पर केश केश होता है। इसके बाद ''अन्येषामारी दृश्यते'' इस सूत्र से पूर्वपद आकार के बहुव्रीहि में कर्मव्यतिहर में द्योत्य दीर्घ होने पर दीर्घ होने पर केशाकेश होता है। इसके बाद कर्मव्यतिहार में समासान्त में इच् प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप होने पर केशाकेश श होता है। इसके बाद केशाकेश शब्द की भसंज्ञा होने पर अकार लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर इसके बाद केशाकेश शब्द का भसंज्ञा होने अकार का लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न केशाकेशि शब्द से सु प्रत्यय में प्रक्रिया कार्य में केशाकेशि रूप बना।

इसी प्रकार ही तृतीयान्त समास में दण्डैश्च दण्डैश्च गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तं दण्डादण्डि यह उदाहरण है। केशोकेशि दण्डादण्डि इत्यादि में समासान्त इच विधायक सूत्र प्रवृत्त है।

(4.12) ''इच्कर्मव्यतिहारे'' (5.4.126)

सूत्रार्थ–कर्मव्यतिहार में जो बहुव्रीहि उस समासान्त तद्धित संज्ञक इच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–षड़ विधियों में पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त इच् प्रत्यय होता है। इस सूत्र में इच् प्रथमा एकचनान्त पद है। कर्मव्यतिहारे यह सप्तम्थेकवचनान्त पद है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णो: स्वाङ्गात्षच्'' इस सूत्र से बहुव्रीहौ पद की अनुवृत्ति आती है। ''प्रत्यय:'', ''परश्च'', ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ये अधिकृत सूत्र हैं। ''परश्च'' इस अधि कारसूत्र के बल से बहुव्रीहौ इसका पञ्चम्यन्तता से विपरिणाम होता है। और उसके कर्मव्यतिहार में इस अन्वय से कर्मव्यतिहार में जो बहुव्रीहि: होता है यही अर्थ है। और सूत्र का अर्थ आता है–''कर्मव्यतिहार में जो बहुव्रीहि उससे समासान्त तद्धित संज्ञक इच् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–इस सूत्र के सप्तम्यन्त समास में केशाकेशि यह उदाहरण है। केशेषु केशेषु गृहीत्वा वदं युद्धं प्रवृत्तम् इस लौकिक विग्रह में प्रक्रिया कार्य में केशाकेश इस स्थित प्रकृतसूत्र से कर्मव्यतिहार में बहुव्रीहि के केशाकेश इससे समासान्त इच् प्रत्यय होता है। इसके बाढ़ इच के चकार का ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोप:'' इससे लोप होने पर केशाकेश र इस स्थित, पूर्व के ''यचिभम्'' इससे भसंज्ञा होने पर ''यस्येति च'' इससे भसंज्ञक अन्त्य अकार का लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर केशाकेशि निरूपन्न होता है।

इसके बाद निष्पन्न केशाकेशि इससे नपुंसक होने पर प्रक्रिया कार्य में सुप्रत्यय होने पर केशाकेशि रूप बना।

पाठगत प्रश्न-4

32. ''दिङ्नामान्यत्तराले'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

33. ''दिङ्नामान्यन्तराले'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

34. ''तत्र तेनेदमिति सरूपे'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

35. ''इच्कर्मव्यतिहारे'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

36. ''केशाकेशि यहाँ विग्रह क्या है?

(4.13) ''तेन सहेति तुल्ययोगे''

सूत्रार्थ–तुल्ययोग होने पर वर्तमान सह अव्यय को तृतीयान्त के साथ विकल्प से समास होता है। और वह समास बहुव्रीहिसंज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–षड्विधि पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इस सूत्र में लेन सह इति तुल्ययोगे यह पदच्छेद है। तेन पद सप्तम्यन्त अव्यय पद है। सह इस साहित्यबोधक अव्ययपद है। तुल्ययोगे यह सप्तम्यन्तवचनान्त पद है। युगपत्कालिक क्रिया योगे यही अर्थ है। (एक साथ होने वाली क्रियाओं का योग)। तेन पद से तृतीयान्त पद प्राप्त होता है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''विभाषा'', ''शेषोबहुव्रीहि:'' ये अधिकृत सूत्र हैं। और सूत्र का अर्थ होता है–तुल्य योग में वर्तमान के साथ अव्यय को तृतीयान्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह समास बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है-सहपुत्र: अथवा सपुत्र: पुत्रेण सह इस लौकिक विग्रह में पुत्र टा सह इस अलौकिक विग्रह में प्रकृतसूत्र से तृतीयान्त से पुत्र टा इससे तुल्ययोग में वर्तमान को सह अव्यय बहुव्रीहिसमास संज्ञक होता है। इसके बाद प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर प्रक्रियाकार्य में सहपुत्र शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद सह का विकल्प से स आदेश होता है। उसके बाद निष्पन्न शब्द सुपुत्र से सुप्रत्यय होने पर सपुत्र: रूप बना। और सह के स आदेश के अभाव में सु प्रत्यय होने पर सहपुत्र: रूप बना। और सह के स आदेश के अभाव में सु प्रत्यय होने पर सहपुत्र: रूप बना।

सहपुत्र: सपुत्र: इत्यादि में विकल्प से स आदेश विधायक यह सूत्र प्रवृत्त है।

(5.14) ''वोपसर्जनस्य''

सूत्रार्थ–उपसर्जनसर्वावयवक का बहुव्रीहि में अवयव के सह का विकल्प से स आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों की षङ विधियों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से सह का विकल्प से स आदेश होता है। इस सूत्र में वा उपसर्जनस्य पदच्छेद है। ''वा'' यह विकल्पार्थक अव्यय पद है। उपसर्जनस्य यह षष्ठी एकवचनान्त पद है। ''अलुसुत्तरपदें इससे उपपदे यह यह अधिकृत सूत्र है। ''सहस्य स: संज्ञायाम्'' इस सूत्र से सहस्य स: इन दोनों पदों की अनुवृत्ति आती है। उपसर्जनम् अस्य अस्ति उपसर्जन: (उपसर्जन इसका है उपसर्जन) मतुप् अर्थ में अर्श और आद्यच्। उत्तरपद से आक्षिप्त समास ही विशेष्य है। उपसर्जन का तात्पर्य उपसर्जन के समान समास का है। उपसर्जन स: वा अवयक का ही तात्पर्य है। उपसर्जन का इससे लब्ध बहुव्रीहि

का अन्वय होता है। बहुव्रीहि का षष्ठी अवयव है। और सूत्र का अर्थ होता है–उपसर्जन सः वा अवयवक का बहुव्रीहि के अवयव सह का विकल्प से स आदेश होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है सहपुत्रः सुपत्रः। पुत्रेण सह इस लौकिक विग्रह में पुत्र टा सह इस अलौकिक विग्रह में ''तेन सहेति तुल्योगे'' इससे बहुव्रीहि समास होने पर सहपुत्र निष्पन्न होता है। इसके बाद प्रकृत सूत्र से सह का विकल्प से स आदेश होने पर निष्पन्न सपुत्र शब्द से सु प्रत्यय होने पर सपुत्रः रूप बना। और उसके अभाव पक्ष में सहपुत्रः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-6

37. ''तेन सहेति तुल्ययोगे'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

38. ''वोपसर्जनस्य'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

39. ''तुल्ययोगे'' इस पद का क्या अर्थ है?

40. सहपुत्रः, सपुत्रः यहाँ सह का विकल्प से स आदेश किस सूत्र से और कैसे होता है?

पाठ सार

इस पाठ में बहुव्रीहिसमास प्रतिपादित हुआ है। प्राय अन्य पद का अर्थ प्रधान हो जिसमें बहुव्रीहि समास कहलाता है। यह बहुव्रीहि समास का सामान्य लक्षण है। और यह बहुव्रीहि समास ''शेषो बहुव्रीहिः'' इस अधिकार बल से ''चार्थे द्वन्दः'' इस सूत्र से पहले तक प्रवृत्त होता है। यहाँ बहुव्रीहि समास विधायक ''अनेकमन्य पदार्थे'', ''संख्ययाव्ययासथादूराधि कसंख्याः संख्येये'', ''दिङनामान्यन्तराक्षे'', ''तत्र तेनेदमिति सरुपे'', ''तेन सहेति तुल्ययोगे'' इन पाँच सूत्रों की व्याख्या की गई है। बहुव्रीहि में पूर्वनिपात विधायक ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' सूत्र प्रस्तुत किया गया है। सप्तमी विशेषणे यहाँ सप्तमी पदसत्व से व्यधिकरणपदी बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद सप्तम्यन्त का अलुग्विधान के लिए हलदन्तात् सप्तम्भ्याः संज्ञायाम्'' सूत्र की व्याख्या की गई है।

''प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरवदलोपः'', ''नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः'', ''सप्तम्युपमानपूर्वपदस्थरेत्तरपदलोपश्च'' इससे वार्तिकों का संग्रहण है उनसे बहुव्रीहि समास के पूर्व पद का उत्तरपद का लोप होता है।

इसके बाद बहुव्रीहि में पुंबद्भाव विधायक सूत्र ''स्त्रियाः पुंबद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' यह सूत्र प्रस्तुत किया गया है। ''अप्पूरणीप्रमाण्योः'' इस समासान्त का अप् प्रत्यय का ''बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात्'' डच् प्रव्यय के ''इच्कर्मव्यतिहारे'' इच् प्रव्यय विधायक तीन सूत्रों की व्याख्या की गई है। आसन्नविंशा इत्यादि में ति शब्द के लोप विधायक

''ति विंशतेर्डिति'' यह सूत्र सहपुत्रः, सपुत्रः इत्यादि में विकल्प से स आदेश विधायक ''वोपसर्जनस्य'' सूत्र की व्याख्या की गई है। और समास से बहुव्रीहि समास इस पाठ में प्रस्तुत किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''अनेकमन्थपदार्थे'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
2. ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
3. ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणी प्रियादिषु'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
4. ''बहुव्रीहौ संख्येये डज बहुगणात्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
5. ''दिङ्नामान्यन्तराले'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
6. ''तत्र तेनेदमिति सरुपे'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
7. ''तेन सहेति तुल्ययोगे'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
8. ''संख्ययाव्ययासन्नदूराधिकसंख्याः संख्येये'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
9. ''पीताम्बरः'' रूप को सिद्ध करो?
10. ''कण्ठेकालः'' रूप को सिद्ध कीजिये?
11. ''चित्रगुः रूप को सिद्ध कीजिये?
12. दक्षिणपूर्वा रूप को सिद्ध कीजिये?
13. केशाकेशि रूप को सिद्ध कीजिये?
14. सपुत्रः रूप को सिद्ध कीजिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. सूत्र में शेषः नाम उक्तादन्यः का है।
2. ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से पहले तक है।
3. ''अनेकमन्यपदार्थे'', ''संख्ययाव्ययासन्नदूराधिकसंख्यासंख्येये'', ''दिङ्नामान्यन्तराले'', ''तत्र तेनेदमिति सरूपे'' और ''तेन सहेति तुल्ययोगेच''।

टिप्पणियाँ

4. अन्यपद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पद को विकल्प से समास होता है। और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

5. ''बहुव्रीहि समास में सप्तम्यन्त को और विशेषण को पूर्व प्रयोग होता है।

6. हलन्त से और अदन्त से सप्तमी के उत्तरपद परे संज्ञा में गम्यमान नहीं होने पर लोप नहीं होता है।

7. अनेकम् यह प्रथमान्त का विशेषण है।

8. कण्ठे कालः।

9. अदत्तशब्द कण्ठशब्द से सप्तमी के ङि के विधान से उसका लोप (लुक्) होता है।

उत्तर-2

10. प्र आदि से पर जो धातुजकृदत्तशब्द तदत्त प्रथमान्त का प्रथमात्त के साथ विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है और बहुव्रीहि में पूर्वपदस्थ धातुज के उत्तरपद का विकल्प से लोप होता है।

11. प्रकृष्टानि पतितानि इति विग्रहः।

12. नञ् के पर अस्त्यर्थक शब्दान्त का प्रथमान्त का प्रथमान्त के साथ विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है। और बहुव्रीहि में पूर्वपदस्थ का अस्त्यर्थक का उत्तरपद का विकल्प से लोप होता है।

13. अविद्यमानः पुत्रः यस्थ सः इति विग्रहः।

14. सप्तम्यन्त सहित और उपमान सहित पूर्वपद के पदात्तर से समास पूर्वपद का और उत्तरपद लोप होता है।

15. कण्ठेकालः।

16. उष्ट्रमुखः।

उत्तर-3

17. पुंवद्भावः।

18. तुल्य प्रवृत्ति निमित्त होने पर जो पुल्लिंग वाचक है उससे पर ऊङअभाव जहाँ तथाभूत स्त्रीवाचक शब्द का पुल्लिंगवाचक रूप समानाधिकरण में स्त्रीलिङ्ग उत्तरपद होता है किन्तु पूरणी और प्रियादि शब्दों के परे नहीं होता है।

19. अनूङ् पद का सत्व से वामोकशब्द का ऊङ प्रत्ययातत्त्व से पुंवद्भावः नहीं होता है।

20. सूत्र में अपूरणीप्रियादिषु पद के सत्व होने पर कल्याणी पञ्चमी यासां राजीणां ताः कल्याणीपञ्चमाः रात्रयः यहाँ पर पञ्चमी पूरण अर्थ प्रत्ययान्त में स्त्रीलिङ्ग उत्तरपद परे,

कल्याणी प्रिया यस्य स कल्याणीप्रियः यहाँ स्त्रीलिङ्ग में प्रियाशब्द में उत्तरपद में पुंवद्भाव नहीं होता है।

21. चित्रगुः।

22. सामासान्त अप् प्रत्यय।

23. पूरणार्थ प्रत्ययान्त जो स्त्रीलिङ्ग तदन्त प्रमाव्यत्त बहुव्रीहि के समासान्त तद्धित संज्ञक अप् प्रत्यय होता है।

24. कल्याणी पञ्चमाः, स्त्री प्रमाणः पुरुषः।

उत्तर-4

25. संख्येयवाचक एकादिसंख्याशब्द से अव्यया आदि से विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

26. संख्येय जो बहुव्रीहि उससे समासान्त तद्धितसंज्ञक डच् प्रत्यय होता है किन्तु बहुगणशब्दान्त से बहुव्रीहि समाज नहीं होता है।

27. सूत्र में अबहुगणात् पद के सत्व होने से समीप में जो है, गणस्थ समीपे ये सन्ति इस विग्रह में यथाक्रम-निष्पन्न उपबहुशब्द से और उपगणशब्द से डच् प्रत्यय होता है।

28. डित् (ड की इत्संज्ञा) परे विंशति के भसंज्ञक के ति का लोप होता है।

27. दशानां समीपे ये इस विग्रह में उपदशाः।

30. संख्येय जो बहुव्रीहिः उससे ''बहुव्रीहौसंख्येयेडजबहुगणात्'' सूत्र से होता है।

31. ति विंशतेर्डिति इस सूत्र से।

उत्तर-5

32. दिशा नाम वाची अन्तरालवाच्य में विकल्प से समास होता है, वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

33. दक्षिणपूर्वा

34. सप्तम्यन्त ग्रहण विषय में सरूपपद में और तृतीयान्त में प्रहरण विषय में इदं युद्धं प्रवृत्तम् इस अर्थ में कर्मव्यतिहार में द्योत्य होने पर विकल्प से समास होता है, वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

35. कर्मव्यतिहार में जो बहुव्रीहि समास है उससे समासान्त तद्धित संज्ञक इच् प्रत्यय होता है।

36. केशेषु केशेषु ग्रहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् इति विग्रहः।

टिप्पणियाँ

उत्तर-6

37. तुल्ययोग में वर्तमान के साथ अव्यय तृतीयान्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह समास बहुव्रीहि (संज्ञक) होता है।

38. उपसर्जनसर्वावयवक का बहुव्रीहि अवयव का सह के साथ विकल्प से स आदेश होता है।

39. युगपत् कालिक क्रिया योगे इति अर्थः।

40. सहपुत्रः, सपुत्रः यहाँ उपसर्जनसर्वावयवक का बहुव्रीहि के अवयव सह का विकल्प से स आदेश होता है और वह ''वोपसर्जनस्य'' सूत्र से होता है।

पाचवां पाठ समाप्त